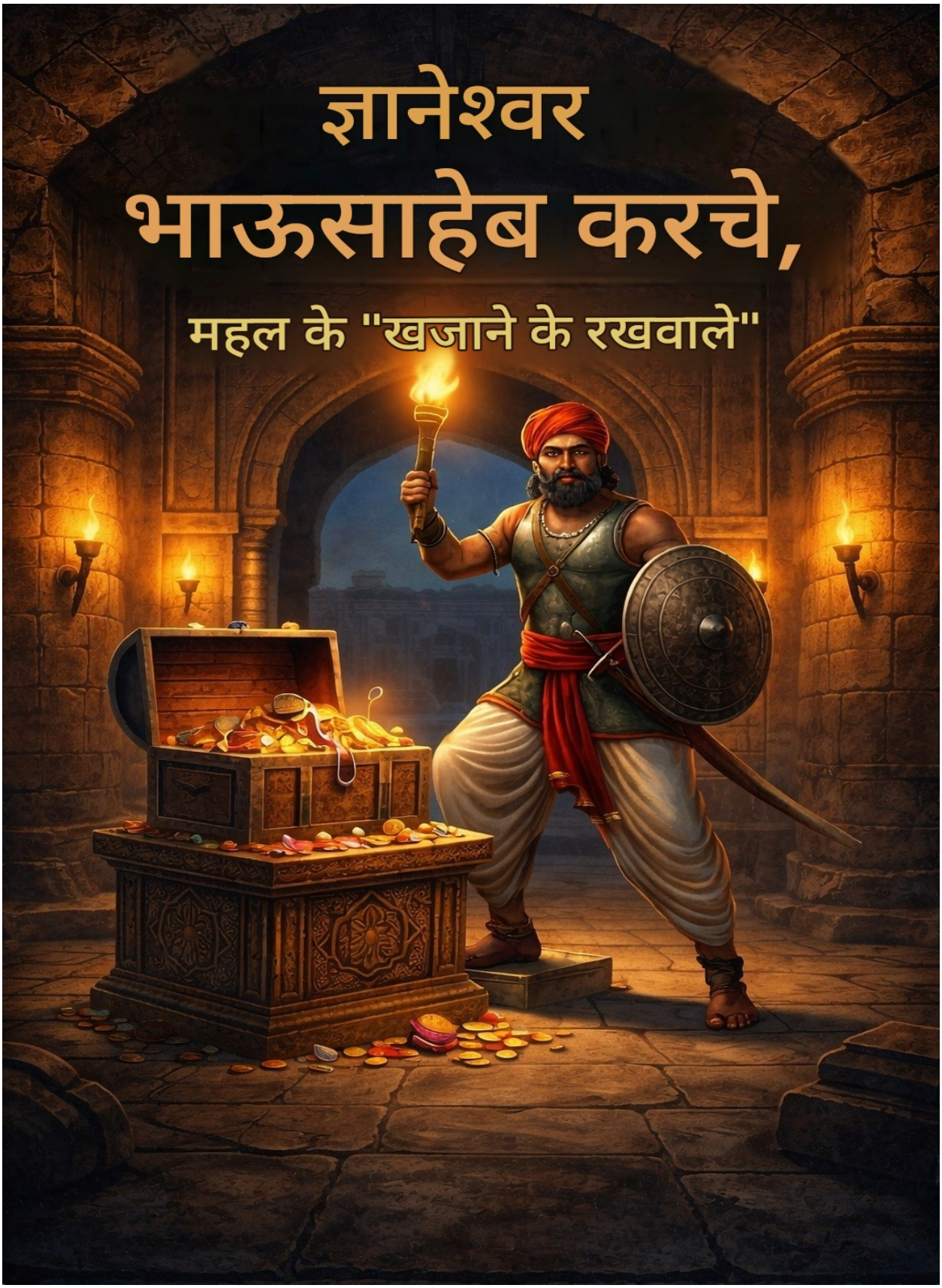
ज्ञानेश्वर
भाऊसाहेब करचे,
महल के "खजाने के रखवाले"

विषयसूची

Chapter 1 – सुरुवात

यह कहानी पेशवाओं के शासनकाल में बने एक महल की है। कुछ लोग कहते हैं कि इसमें एक गुप्त खजाना छिपा है, तो कुछ अन्य कहते हैं कि असंतुष्ट आत्माएं वहां भटकती हैं और एक बड़ा सांप उनके साथ उस खजाने की रखवाली करता है। जब कोई व्यक्ति महल में प्रवेश करता है, तो वह पागल हो जाता है और भूतों से परेशान हो जाता है। अब, इस कहानी के माध्यम से देखते हैं कि यह सब कैसे सच है। तो चलिए कहानी शुरू करते हैं।

मेरे बारे में संक्षिप्त में...

मेरा नाम समीर है। मैंने अपनी प्राथमिक शिक्षा गाँव में पूरी की और बाद में शहर के कॉलेज में पढ़ाई की। हमारे गाँव में दो प्राथमिक विद्यालय थे। एक कक्षा 1 से 4 तक का था और वह हमारे वार्ड में था। हर वार्ड में एक विद्यालय बनाया गया था ताकि वार्ड के बच्चे पास में ही शिक्षा प्राप्त कर सकें। दूसरा कक्षा 1 से 7 तक का था और वह गाँव में ही था। सभी बच्चों ने कक्षा 4 तक की शिक्षा पूरी की और आगे की पढ़ाई के लिए वहाँ चले गए। लेकिन मेरा सपना था कि मैं भी वहीं जाऊँ। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता था कि मैं उसी विद्यालय में जा रहा हूँ। इसका कारण आपको बाद में पता चलेगा!

मैं बचपन से ही बुद्धिमान और जिज्ञासु था। जब भी मुझे कुछ दिखता, मैं उसके बारे में खोजबीन शुरू कर देता। जब भी मुझे कुछ दिखता, मैं सवाल पूछता, क्या यह सच है? ऐसा क्यों है? मैं अपने सवालों से सबको हैरान कर देता था। स्कूल में मैं सभी शिक्षकों का चहेता छात्र था। स्कूल के सभी कमरों की चाबियां मेरे पास होती थीं। जब शिक्षक छुट्टी पर होते, मैं उनकी जगह बैठ जाता था। मैं सभी बच्चों पर दबाव बनाए रखता था। दोपहर के अवकाश के दौरान सबको ठीक से कतार में खड़ा करना, चावल बनाना और सबको खाना परोसना, ये सारी जिम्मेदारियां मुझ पर थीं और मैं ये सारे काम दूसरों से करवाता था। मेरा काम तो बस देखना था। हालांकि अब ये सारे काम छोटे लगते हैं, लेकिन उस समय इन्हें करने में एक अलग ही आनंद आता था।

मैं सुबह उठकर साफ वर्दी पहनकर स्कूल जाती थी, यानी मैं कभी पैदल स्कूल नहीं जाती थी। मेरे पिताजी मुझे हर दिन लेने आते थे, मैं उनके साथ स्कूल जाती, दिन भर दोस्तों के साथ

मस्ती करती और शाम को घर लौट आती। हर शाम पढ़ाई के बाद घर आकर मैं दादी की गोद में बैठ जाती और दादी मुझे बड़ी-बड़ी प्यारी बातें सुनातीं। लेकिन अगर मेरी जिज्ञासु प्रवृत्ति मुझे चुपचाप बैठने देती, तो मैं उनसे कुछ सवाल पूछती रहती।

26 जनवरी को गाँव के स्कूल में नृत्य प्रतियोगिता थी और प्रत्येक वार्ड के स्कूल शाम को गाँव के स्कूल में अपने-अपने नृत्य का प्रदर्शन करने के लिए एकत्रित हुए थे। मैंने भी प्रतियोगिता में भाग लिया। मैंने अपने स्कूल के नृत्य में एक आदिवासी ढोल वादक की भूमिका निभाई। सभी बच्चे मेरे चारों ओर नाच रहे थे और मैं ढोल बजा रहा था।

प्रतियोगिता समाप्त हुई और मैं मंच के पीछे बने वॉशरूम में गया। वॉशरूम जाते समय मैंने कुछ ऐसा देखा जिससे मैं वहीं स्तब्ध रह गया और कुछ ही सेकंड में मेरी जिज्ञासा जागृत हो गई।

मैं पहली बार वहां गया था और मैंने कभी नहीं सोचा था कि मेरे गांव में ऐसा कुछ होगा।

Chapter 2 – रहस्य

मैंने आगे बढ़ने के बारे में सोचा। जब मैं आगे बढ़ा, तो मुझे वहाँ 'प्रवेश निषेध' का बोर्ड दिखाई दिया। लेकिन मैं खुद को रोक नहीं पाया। मैं बस चलता रहा। तभी मुझे पीछे से एक आवाज़ सुनाई दी।

"समीर, तुम कहाँ जा रहे हो?"

जब मैंने पीछे मुड़कर देखा, तो सामने हमारे साहब खड़े थे। मैं अनिच्छा से पीछे मुड़ा और उनकी ओर बढ़ा।

"क्या हो रहा था?"

"कुछ नहीं सर, वह वॉशरूम गए थे।"

"चलो जल्दी करो और दोबारा वहां मत जाओ।"

मेरे अंदर जिज्ञासा की भावना तुरंत जागृत हो गई।

"जी साहब, आप वहां क्यों नहीं जाते?"

"मैं आपको बता दूंगा, आप ही क्यों नहीं बता देते, पिताजी?"

"ठीक है महोदय, मैं नहीं जाऊंगा।"

हम प्रतियोगिता स्थल पर गए। रात के लगभग ग्यारह बजे होंगे जब मंच से एक आवाज़ आई, "हमें पुरस्कार समारोह का कार्यक्रम जल्द से जल्द समाप्त करना चाहिए। हमारे पास बहुत कम समय है, हमारा कार्यक्रम बारह बजे तक समाप्त हो जाना चाहिए।"
मुझे आश्चर्य हुआ कि कार्यक्रम को दोपहर 12 बजे तक समाप्त क्यों करना था और मैंने तुरंत शिक्षक से यह सवाल पूछा।
"सर, आपको अपना कार्यक्रम बारह बजे ही क्यों समाप्त करना पड़ा?"
सर ने कुछ नहीं कहा, लेकिन क्योंकि मैंने थोड़ा ज्यादा जोर दिया, तो उन्होंने वो बात कह दी जो वे कहना चाहते थे।
"बारह बजे के बाद बत्तियाँ बुझ जाएँगी, इसलिए मुझे इसे खत्म करना होगा।"
मेरे बचकाने मन ने इस पर विश्वास कर लिया। आखिरकार, पुरस्कार वितरित किए गए। हमारे स्कूल ने दूसरा स्थान प्राप्त किया था। हमें ट्रॉफी और उसके साथ मानदेय भी मिला। सभी ने ट्रॉफी के साथ फोटो खिंचवाई और मस्ती शुरू हो गई।
सभी लोग सर की कार के पास आए और कार में बैठ गए। सर भी कार के पास आए और यह सुनिश्चित किया कि सभी लोग आ गए हैं। भले ही हमें पहला स्थान नहीं मिला, फिर भी हम खुश थे। सभी लोग जल्दी में थे। हर कोई ट्रॉफी लिए घूम रहा था और उसे दिखा रहा था। काफी देर तक कार स्टार्ट नहीं हुई। मैडम ने सर से पूछना शुरू किया।
"क्या बात क्या बात ?"
"अरे मैडम, गाड़ी स्टार्ट नहीं हो रही, क्या हुआ? उसे अचानक कुछ समझ नहीं आ रहा!"
सर बहुत परेशान थे और उनके चेहरे पर डर साफ झलक रहा था। काफी कोशिश करने के बाद भी गाड़ी स्टार्ट नहीं हुई।
"बच्चों, ध्यान से सुनो।"
सभी बच्चों ने एक साथ सिर हिलाया और उन्हें घूरने लगे।
"जब तक मैं न कहूँ, कोई भी कार से बाहर नहीं निकलेगा और न ही खिड़की नीचे करेगा!"
"हाँ..." (सभी बच्चों ने एक साथ सिर हिलाया)
जैसे ही सर कार से बाहर निकलने लगे, मैडम ने आवाज लगाई।
"यह कहाँ है, महोदय?"

"पास में ही एक मैकेनिक रहता है, इसलिए वह उसे ले जाएगा।"
"लेकिन महोदय, क्या आपने समय देखा है?"
"मुझे पता है, महोदया, लेकिन इन सभी बच्चों की ज़िम्मेदारी मुझ पर है। इसलिए मुझे यह करना ही होगा। बच्चों को अकेला मत छोड़िए और उन्हें कहीं मत जाने दीजिए। चाहे कुछ भी हो जाए, कोई भी गाड़ी से नीचे नहीं उतरेगा। मैं आ चुका हूँ।"
इतना कहकर सर चले गए और नजरों से ओझल हो गए।
मैडम भी सर की तरह ही उसी स्थिति में थीं। उनके चेहरों पर डर साफ झलक रहा था। लेकिन अगर वे डरे हुए थे, तो इन मासूम बच्चों का क्या होगा? उन्होंने खुद को दिलासा दिया। (दरअसल, उस समय सर और मैडम को यह स्वीकार करना पड़ा कि उन्होंने बच्चों की जान बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाली थी। जैसा कि पिछले शिक्षकों के साथ भी था। शिक्षक और गांव के बीच एक अटूट रिश्ता था।)
कुछ ही देर में सर एक आदमी को वहाँ ले आए। वह भी बहुत डरा हुआ था। चारों ओर घोर अंधेरा छाया हुआ था। इतना अंधेरा था कि अगर कोई पास आकर खड़ा भी हो जाता, तो उसे कुछ समझ नहीं आता।
"महोदय, इन्हें तुरंत रुकने के लिए कहिए। बारह बज चुके हैं।" (महोदया महोदया महोदय से बात कर रही थीं)
वह आदमी अपने हाथों को बहुत तेज़ी से हिला रहा था और अंत में उसने घोषणा की कि काम हो गया है। सर ने उसे धन्यवाद दिया और धीरे-धीरे चलने लगे जैसे कोई कुत्ता उनका पीछा कर रहा हो। अब बारह बजने में केवल दो मिनट बचे थे। तभी एक ठंडी हवा चली और सबको कंपकंपी महसूस हुई। लेकिन सर की हालत बहुत खराब हो गई थी। उन्हें अब चुभन हो रही थी। वे अंदर आए और बैठ गए और ठीक उसी समय घड़ी में बारह बज गए। सर और मैडम राम-राम का जाप करने लगे और ठंडी हवा का झोंका अब तूफान का रूप ले चुका था और तेज़ हवाएं चलने लगीं। एक पल के लिए ऐसा लगा जैसे हवा के इस झोंके से हमारी कार उड़ जाएगी।
सर ने जल्दी से गाड़ी स्टार्ट की और हम चल पड़े। गाड़ी स्कूल परिसर से निकलकर थोड़ा आगे जाकर मुख्य चौराहे पर मुड़ गई। सर बहुत तेज़ गाड़ी चला रहे थे। चूंकि रात का समय

था, इसलिए सड़क पर सन्नाटा पसरा हुआ था। मैडम सभी बच्चों के साथ कतार में बैठी थीं और सर तेज़ गाड़ी चला रहे थे। पंद्रह मिनट बाद हम वहां से निकले और मैडम का ध्यान भटक गया और वह लगभग चीख पड़ीं। सभी बच्चे मैडम की ओर देखने लगे, यह सोचकर कि वह इस तरह क्यों चीख रही हैं। मैडम रोते हुए बोलने लगीं।

"सर, गाड़ी रोकिए!"

"महामहिम, क्या हुआ?"

"सर, बस बाहर देखिए, आपको समझ आ जाएगा।"

सर ने बाहर देखा और चौंक गए।

हम लगभग पंद्रह मिनट से कार में थे और कार चल रही थी। सर ने बाहर देखा और अचानक ब्रेक लगा दिया। सभी बच्चे डर गए और बाहर देखने लगे। इतनी देर तक गाड़ी चलाने के बाद भी हम वहीं अटके रहे। मैडम का सिर कार के आगे वाले हिस्से से ज़ोर से टकरा रहा था और खून बह रहा था। थोड़ी देर में मैडम बेहोश हो गईं। सर को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। सर ने कार दोबारा स्टार्ट की और हम चल पड़े। हमारी कार उसी जगह पर आकर रुक गई। अब सभी के शरीर डर से कांप रहे थे। हमने कितनी भी कोशिश की, हम वहां से निकल नहीं पा रहे थे क्योंकि हम घने कोहरे में फंस गए थे। अब बाहर का माहौल पूरी तरह बदल गया था। हर तरफ घना कोहरा छा गया था। लोगों के चीखने की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, बीच-बीच में तलवारों के ढालों से टकराने की आवाज़ें आ रही थीं, तरह-तरह की आवाज़ें आने से सभी बच्चे और भी ज़्यादा डर गए थे।

सभी चिंतित थे क्योंकि हममें से कोई भी अभी तक घर नहीं गया था। सबको पता था कि बारह बजे के बाद कोई भी वहाँ नहीं रुकता, और अब डेढ़ बज चुके थे। किसी के न आने पर सभी अभिभावक गाँव के विद्यालय में आकर इंतज़ार कर रहे थे। अपने अनुभव से वे समझ सकते थे कि उनके बच्चे अभी तक क्यों नहीं आए हैं। सभी अभिभावक जल्दी से गाँव के विद्यालय की ओर चल पड़े। सभी अभिभावक पहले गाँव के पुजारी के पास गए और उन्हें सब कुछ बताया और उन्हें अपने साथ ले आए। पुजारी अभी भी कोशिश कर रहे थे, लेकिन सब व्यर्थ था। पुजारी और सभी अभिभावक विद्यालय के पास पहुँचे, लेकिन उन्हें आगे कुछ भी दिखाई

नहीं दे रहा था। सब कुछ उस घने कोहरे से ढका हुआ था। पुजारी बाबा आगे आए और बोलने लगे।
"जब तक मैं न कहूँ, कोई एक कदम भी आगे नहीं बढ़ाएगा, और अगर कोई यह गलती करता है, तो वह भी इन बच्चों के साथ चकवा जाएगा।"
"ठीक है पिताजी, लेकिन जल्दी कीजिए, बच्चों की जान खतरे में है।"
बाबा ने एक हाथ में रुद्राक्ष की माला और दूसरे हाथ में राख लेकर मंत्र का जाप शुरू किया। उन्होंने राख सब पर छिड़की और कमंडल से पवित्र जल छिड़कते हुए आगे बढ़ने लगे। उस अदृश्य शक्ति के कार्य में बाधा डालने से उसकी शक्ति और भी बढ़ गई और तेज हवा चलने लगी, लेकिन बाबा द्वारा लगाई गई राख से किसी को कोई हानि नहीं हुई। धीरे-धीरे हवा शांत हो गई, कोहरा छंट गया और पूरा वातावरण सामान्य हो गया।
"यहाँ से जल्दी निकल जाओ, अन्यथा एक और संकट की संभावना है।"
सर ने तुरंत गाड़ी स्टार्ट की, सब लोग गाड़ी में बैठ गए और गाड़ी वाडीवार स्थित स्कूल के ठीक सामने रुक गई। सब पसीने से भीगे हुए थे। मैडम अभी भी बेहोश थीं। बाबा ने उनके चेहरे पर पवित्र जल छिड़का और उन्हें होश आ गया।
"आप सभी अपनी किस्मत की वजह से बच गए।"
"बहुत-बहुत धन्यवाद पिताजी, भगवान ही जाने क्या होता अगर आप आज यहां नहीं होते।"
"यह सब उस माता तुलजाभवाई की कृपा से हुआ है, मैं तो बस एक सहायक हूं।"
सब लोग बाबा के चरणों में गिर पड़े और बाबा चले गए। सर भी मैडम को अस्पताल ले गए। जब मैं घर आई तो मुझे तेज बुखार था। पूरे शरीर में बुखार की वजह से झुनझुनी हो रही थी। मैं उठ भी नहीं पा रही थी। मैं दो-तीन दिन बिस्तर पर पड़ी रही।
धीरे-धीरे मेरी तबीयत सुधरने लगी और मैं स्कूल जाने लगी, लेकिन मुझे बार-बार वही बात याद आ रही थी। आखिर हो क्या रहा था? सब लोग क्या कह रहे थे? कितना बड़ा चमत्कार, कितनी बड़ी शक्ति! मैंने ऐसा पहले कभी नहीं देखा था, या शायद मैं अकेली थी? इसलिए मैं उलझन में थी। मेरी जिज्ञासा, जो दो दिनों से शांत थी, फिर से जाग उठी। शाम को स्कूल के बाद, मैं सीधे घर आ गई। मैंने पढ़ाई की और दादी की गोद में बैठ गई। दादी ने सही अंदाज़ा लगाया कि मैं कोई नया सवाल लेकर आई हूँ।

"आज आपके पास कौन सा नया प्रश्न है?"
"उस दिन क्या हुआ था, माँ?"
"यह एक मजाक था।"
"चकवा का क्या अर्थ है?"
"चक्रवात... चक्रवात एक बड़ा तूफान होता है और उस तूफान की गति के कारण, हम उससे बच नहीं सकते।"
मुझे पता था कि दादी ने कुछ कहा था, लेकिन मैं वास्तव में उस दीवार के बारे में पूछना चाहता था जो मैंने देखी थी, इसलिए मैंने सवाल को एक तरफ रख दिया।
अध्याय 3 – खजाना
"गांव में स्कूल के पास वह दीवार क्या है, अज्जी?"
"अरे, क्या यह सिर्फ एक दीवार नहीं है?"
"तो यह क्या है?"
"यह एक महल है।"
"वह किसका किला है?"
"ये तो बहुत बड़ी बात है, बेबी।"
"तो मुझे इसके बारे में बताओ, दादी।"
और दादी ने उस महल की कहानी सुनाना शुरू कर दिया।
"यह कहानी बहुत समय पहले की है, पेशवा काल की। यह महल पेशवा काल में ही बनवाया गया था। हमारे गाँव में चार भाई थे। दो सगे भाई और दो सौतेले भाई। कुल चार भाई थे। उनमें से एक पेशवा के दरबार में काम करता था। बाकी तीन गाँव में रहते थे। समय के साथ, इन सगे भाइयों और सौतेले भाइयों के बीच भयंकर झगड़ा हुआ और वे अलग हो गए। इन्हीं चार भाइयों की अगली पीढ़ी से हमारे गाँव में बने चार महल बने हैं। हर भाई ने अपनी अलग बस्ती बनाई और अलग रहने लगा। सबसे बड़ा भाई पेशवा के दरबार में काम करता था, इसलिए उसे किसी चीज की कमी नहीं थी।"
एक बार बड़ा भाई पड़ोसी राज्य में शिकार करने गया और वहाँ उसकी नज़र एक सुंदर युवती पर पड़ी। उसे देखते ही उससे प्रेम हो गया। कुछ दिनों बाद उनका विवाह हो गया।

दिन बीतते गए और बड़े भाई के दो प्यारे बच्चे हुए। उसका परिवार खुशहाल था। बच्चे बड़े हो रहे थे और वे सुखमय जीवन जी रहे थे।

धीरे-धीरे उसने पेशवा से ऊंटों पर धन लेना शुरू किया और इस महल का निर्माण शुरू करवाया। वह ऊंटों पर धन लेकर जाता था और यहीं महल का काम पूरी तेजी से चल रहा था। यह सिर्फ एक महल नहीं बल्कि गुरिल्ला युद्ध का एक साधन था। उस महल में कई चीजें समाहित थीं। उसके द्वार भव्य थे, उसकी दीवारें सुंदर नक्काशी से सजी थीं, जगह-जगह चित्रकारी की गई थी, एक विशाल दरबार (हॉल), अनगिनत कमरे, कीमती रेशमी पर्दे, चंदन के दरवाजे, महल में कई सुख-सुविधाएं मौजूद थीं।

किला जितना सुंदर और आकर्षक था, उतना ही खतरनाक दुश्मन के लिए भी था। किले में तलवारें और ढालें छुपाई गई थीं। किले में गोला-बारूद, कई तरह के हथियार और अन्य कई चीजें भी थीं। लेकिन ये सारी चीजें किले में इस तरह रखी गई थीं कि किसी की नज़र उन पर न पड़े, और केवल बड़े भाई को ही इन गुप्त स्थानों की जानकारी थी। बाहर से देखने पर लगता था कि किसी राजा ने अपनी रानी के लिए यह महल बनवाया है। लेकिन यह कोई महल नहीं था, बल्कि दुश्मन के लिए उसका करदंकल था।

महल की वो खूबसूरत दिखने वाली दीवारें महज़ दीवारें नहीं थीं, बल्कि एक तरह की सुरंग थीं। सारी दीवारें अंदर से खोखली थीं और किसी को नहीं पता था कि उन खोखली दीवारों से शुरू होने वाला रास्ता कहाँ जाकर खत्म होता है। हर दीवार अंदर से खोखली थी और अलग-अलग जगहों तक पहुँचने के लिए सुरंगें बनाई गई थीं। बाहर से महल के अंदर पानी कभी नहीं आता था। महल में कई जगहों पर पानी के कुएँ खुदे गए थे और वे भी दिखाई नहीं देते थे। उसने अब अपार धन-दौलत जमा कर ली थी। हालाँकि, उसने महल में कहीं भी खजाना रखने के लिए भंडारगृह नहीं बनवाया था। उसने सारा खजाना गुप्त स्थानों में छिपा रखा था।

Chapter 4 – रक्षक

दादी ने आगे कहा, "बड़े भाई के दोनों बच्चे अब बड़े हो चुके थे और सुखमय जीवन जी रहे थे। लेकिन उनका सुखमय जीवन पल भर में ही नष्ट हो गया। उनके अन्य भाइयों को उनका सुखमय जीवन दिखाई नहीं दिया, और उनमें से एक ने षड्यंत्र रचा। वह अपने बड़े भाई से

मिलने के बहाने महल में दाखिल हुआ, और वहाँ की दौलत देखकर वह भ्रमित हो गया और उसे यह भ्रम हो गया कि वह सब कुछ भूल चुका है।"

भाई के मन में अब तीव्र लालसा जाग उठी थी और एक दिन, बड़े भाई की पत्नी और बच्चों के गाँव से बाहर जाने का फायदा उठाकर, वह रात में महल में घुस गया। महल में घुसते ही उसने सबसे पहले अपने भाई पर हमला किया। बड़ा भाई जान बचाकर भागने लगा। पर उसका सब व्यर्थ था। उसने बेखबर ही तलवार से उस पर वार कर दिया था और उसे खून से लथपथ छोड़ दिया था। वह आगे भागता हुआ पीछे से तलवार से उस पर वार करता रहा। बड़े भाई की कमाई का धन आज उसकी मौत का कारण बन गया। अब उसे एहसास हुआ कि उसके अपने ही आदमी ने उसके बालों से उसका गला काट दिया है।

उसने अपनी जान जोखिम में डालकर दीवार में बनी एक सुरंग में घुसकर उससे बचने की कोशिश की और वहीं छिप गया। उसके भाई ने सोचा कि वह मर गया है, इसलिए उसने उस पर ध्यान नहीं दिया और अब वह महल में खजाने की खोज में जुट गया।

(हमारा अंधविश्वास फैलाने का कोई इरादा नहीं है। यह कहानी केवल पाठकों के मनोरंजन के लिए है। कहानी के सभी पात्र और स्थान काल्पनिक हैं और उनका वास्तविक दुनिया से कोई संबंध नहीं है, और यदि ऐसा पाया जाता है, तो इसे केवल एक संयोग माना जाना चाहिए।)

वहाँ बड़ा भाई मृत्यु के द्वार पर खड़ा दर्द से कराह रहा था। आज उसका धन-दौलत उसके लिए खतरा बन गया था। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि उसका अपना भाई उसके साथ ऐसा व्यवहार करेगा। खैर, वह अपने भाई को मृत्यु के द्वार पर छोड़कर खजाने की खोज में जुट गया। उसने अब सारे महल छान मारे, पर खजाना नहीं मिला। क्योंकि बड़े भाई ने खजाने को बहुत सावधानी से छिपाया था।

अचानक पूरा महल हिलने लगा। सबको लगा जैसे भूकंप आ गया हो और ज़मीन कांप रही हो। खजाने की तलाश में निकला भाई बहुत डर गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हो रहा है। धीरे-धीरे महल के दरवाजे बंद हो गए। महल की सारी बत्तियाँ अपने आप बुझ गईं। चारों तरफ अंधेरा छा गया और अचानक एक ज़ोरदार आवाज़ हुई। महल की एक दीवार गिर गई। बड़ा भाई अपनी आखिरी साँसें गिन रहा था और मरते हुए उसने श्राप दिया,

"जो भी मेरे इस महल में आएगा, या तो मर जाएगा या पूरी तरह पागल हो जाएगा।" और उसी क्षण वह एक बड़े साँप में बदल गया और उसने अपने भाई को काट लिया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। महल के सारे दरवाजे और खिड़कियाँ गिर गईं और महल पूरी तरह वीरान हो गया। तब से उस महल में कोई नहीं गया है।

"दादी, आगे क्या हुआ? उसके बच्चों और पत्नी का क्या हुआ?"

जैसे ही उन्हें महल की खबर मिली, उनकी पत्नी की भी मौके पर ही मृत्यु हो गई। बाद में, पेशवा को इस खबर का पता चला और उन्होंने बड़े भाई के दोनों बेटों को अपने दरबार में बुलाया। दोनों बेटों के शौक अलग-अलग थे। एक को कुत्ते पालने का शौक था और दूसरे को कबूतर पालने का। पेशवा उन्हें शस्त्र भंडार में ले गए और उनसे कहा कि वे जो चाहें उठा लें। पेशवा को लगा कि वे अपने पिता की तरह बहादुर होंगे और ढाल और तलवारें जरूर उठाएंगे। लेकिन सामने का दृश्य देखकर वे बहुत क्रोधित हो गए। क्योंकि उनमें से एक ने वहाँ कुत्ता उठा लिया, जबकि दूसरा बेटा कबूतरों के पास जाकर उन्हें दाना चुगने लगा। पेशवा ने उन्हें कुछ पैसे और गहने देकर वहाँ से विदा कर दिया। बाद में, वे गाँव आ गए और खेती-बाड़ी करने लगे और तब से महल वहीं पड़ा है।

कई दिनों बाद, कुछ नए लोग गाँव में आए और उनमें से एक गलती से महल की सुरंग में चला गया और फिर कभी बाहर नहीं निकला। जो लोग उसे ढूंढने गए, उनमें से कुछ अंदर ही फंस गए, जबकि कुछ पागल होकर बाहर आए। आज भी वे पागल लोग ठीक नहीं हैं। बाद में, सभी ग्रामीणों ने वहाँ प्रवेश निषेध का बोर्ड लगा दिया ताकि नए लोग फंस न जाएँ। उसके बाद, कोई भी महल में प्रवेश नहीं करता था, लेकिन जो भी आधी रात से आधी रात के बीच वहाँ रहता, वह उनके जाल में फंस जाता। ठीक वैसे ही जैसे तुम फंस गए।

दादी की कहानी सुनाने के बाद हम सब सो गए। मेरी खुशी चरम पर थी। कभी-कभी मुझे लगता था कि मैं उसी स्कूल में जा रही हूँ। अब स्कूल में परीक्षाएँ शुरू हो गई थीं। परीक्षाएँ खत्म हो गईं और स्कूल में छुट्टियाँ शुरू हो गईं। अब मैं पाँचवीं कक्षा में जा रही थी और पाँचवीं कक्षा में जाने के लिए मुझे गाँव के स्कूल में जाना पड़ता क्योंकि उस वार्ड में केवल चौथी कक्षा तक ही स्कूल था। अब गर्मियों की छुट्टियाँ खत्म होने के बाद मैं गाँव के स्कूल में जाऊँगी, यानी उस वार्ड के पास वाले स्कूल में।

अब मैं पाँचवीं कक्षा में थी। आज मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। आज मैं उस महल के पास वाले स्कूल में आई थी जिसका मुझे इतने दिनों से इंतज़ार था। नया स्कूल, नए दोस्त, नए शिक्षक, सब कुछ नया था। मुझे यहाँ के माहौल में ढलने में थोड़ा समय लगा। धीरे-धीरे मैं सबसे घुलमिल गई और दिन खुशी-खुशी बीतने लगे। दोस्तों की संगति और उनके खेलने की आवाज़ों में मैं उस महल को पूरी तरह भूल चुकी थी। रोज़ाना पढ़ाई, दिन भर खेलना और शाम को दादी से बातें करने के बीच मुझे उस महल पर ध्यान देने का समय ही नहीं मिलता था और मेरे मन में थोड़ा डर भी था, इसलिए मैंने उसे नज़रअंदाज़ कर दिया। इस तरह एक साल बीत गया।

मैं सहावी गया और अब उस महल के बारे में मेरी जिज्ञासा और भी बढ़ गई। दिन बीतते जा रहे थे, लेकिन पढ़ाई और शिक्षकों की निगाहों से बचने का कोई मौका नहीं मिल रहा था। एक दिन मैंने दोपहर के अवकाश में उस महल में जाने का फैसला किया। मैं महल को अंदर से देखना चाहता था। मैं महल की ओर चलने लगा और महल के दरवाजे के पास खड़ा हो गया। मेरी बेचैनी बढ़ती जा रही थी। जैसे ही मैं अंदर जाने वाला था, किसी ने मुझे पीछे खींच लिया। जब मैंने मुड़कर देखा, तो वह रमेश था, मेरा बचपन का दोस्त। वह हमेशा मेरे साथ रहता था। "तुम मेरे सबसे प्यारे दोस्त हो," उसने बिल्कुल ऐसे ही कहा। मैंने उसे सब कुछ बताया और उसने कहा कि आज अमावस्या है। आज अंदर जाने का दिन नहीं है। हम बाद में कभी जाएंगे और हम वापस मुड़ गए।

उस घटना के पंद्रह-बीस दिन बाद एक चौंकाने वाली घटना घटी। हमारे स्कूल का एक लड़का पागल हो गया था। वह हमारे ही स्कूल का था, लेकिन मुझसे उम्र में बड़ा था। उसकी कक्षा के लड़के मैदान में क्रिकेट खेल रहे थे और खेलते-खेलते गेंद आंगन में चली गई। वह गेंद लेने आंगन में गया और पूरी तरह पागल होकर वापस आया। वह पागल तो था, लेकिन उसमें एक अलग ही शक्ति थी। चाहे गेंद कितनी भी भारी क्यों न हो, वह उसे एक हाथ में उठाकर फेंक देता था। उसकी दृष्टि बहुत दूर तक जाती थी। कोई उसके बारे में कितनी भी धीमी आवाज़ में बात करे, वह बात उस तक पहुँच जाती थी और अगले ही पल वह उस व्यक्ति पर हमला कर देता था। इस डर के कारण गाँव के लोग उसके बारे में बात करना बंद कर चुके थे। उसने एक वीर क्षत्रिय की शक्ति प्राप्त कर ली थी। उसकी दृष्टि, उसके कान और

उसकी ताकत सब एक सैनिक की तरह थे। उसे काबू में करने के कई प्रयास किए गए, लेकिन यह नामुमकिन था।
उस घटना के कारण मैं भी बहुत डर गया था और मैंने कुछ दिनों तक उसके पास बिल्कुल न जाने का फैसला किया।
महल में दिन-प्रतिदिन बुरी घटनाएं बढ़ती जा रही थीं और उनका बुरा असर हर जगह दिखाई दे रहा था। इसलिए मेरे पिता ने मुझे उस स्कूल से निकाल लिया और मुझे ग्रामीण क्षेत्र में पढ़ने के लिए भेज दिया।
मैं उस स्कूल से दूसरे स्कूल में गया और उस किले के बारे में पूरी तरह भूल गया। हालांकि मैं उपनगरों के एक स्कूल में पढ़ता था, फिर भी कभी-कभी मुझे उस किले की याद आती थी। लेकिन मैं उस किले को पूरी तरह से अनदेखा कर रहा था। जिस किले के बारे में मैं इतने लंबे समय से उत्सुक था, अब वह मेरे लिए डर का कारण बन गया था। अब मेरी प्राथमिक शिक्षा पूरी हो चुकी थी और मैं कॉलेज जा रहा था। कॉलेज में, मैंने एक प्रोजेक्ट किया और मुझे यह साबित करना था कि इस दुनिया में भूत नहीं होते। मुझे उन लोगों से पूछना था जिन्हें बहुत अनुभव हैं कि वहां वास्तव में क्या हुआ था और इसे वैज्ञानिक रूप से हल करना था, और मैं इसमें सफल रहा।
कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद, मैं नौकरी के लिए पुणे जा रहा था, इसलिए काम शुरू करने से पहले मैं अपने गाँव जाना चाहता था। मैं अपने गाँव गया और सारी पुरानी यादें ताज़ा हो गईं।
कुछ दिन आराम करने के बाद मैं अपने दोस्त से मिलने गया। उसने वहाँ देखे गए किले का ज़िक्र किया। कॉलेज में किए गए प्रोजेक्ट्स के बाद मेरा डर भी कम हो गया था। इसीलिए हमने उस किले में जाने की नई योजना बनाई। हमने सारी तैयारियाँ कर लीं और किले में जाने का दिन तय कर लिया।
पूर्णिमा की रात चारों ओर चांदनी से जगमगा रही थी। बुलबुल चहचहा रही थीं और सन्नाटे को तोड़ रही थीं। कहीं बीच में, एक छोटी चिड़िया कर्कश आवाज निकाल कर चुप हो गई। हम महल के मुख्य द्वार के पास पहुँचे। मैंने अपने दोस्त का हाथ पकड़ा और अंदर जाने लगा, लेकिन उसने मेरा हाथ छोड़ दिया और मुझे पहले अंदर जाने को कहा और यह भी कहा कि

अगर कुछ हो जाए तो मैं यहीं इंतजार करूँ क्योंकि मुझे बाहर किसी की जरूरत है। मैं भी अकेले जाने के लिए तैयार हो गया।

मैं महल में दाखिल हुआ और चारों ओर देखा। वहाँ जो कुछ मैंने देखा, उसे देखकर मेरे पैरों तले ज़मीन खिसक गई। दरअसल, महल इतने लंबे समय से बंद था कि अब तक उसमें बहुत सारा कूड़ा-कचरा और मकड़ी के जाले जमा हो जाने चाहिए थे। लेकिन असल में वहाँ कुछ भी नहीं था। पूरा महल लाखों बत्तियों से जगमगा रहा था। हर खंभे पर एक मशाल जल रही थी और उससे लपटें निकल रही थीं। महल बिल्कुल वैसा ही था जैसा अज्जी ने बताया था। कहीं भी कुछ नहीं बदला था। मैं सोच में पड़ गया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि यहाँ क्या हो रहा है। मैं आगे बढ़ा और महल के प्रांगण में गया। मेरे सामने का दृश्य दिल दहला देने वाला था। मैं डर से कांप रहा था और मेरी साँसें तेज़ हो रही थीं।

सामने वाली उस शानदार कुर्सी पर एक आदमी बैठा था। संभवतः वह बड़ा भाई था। दुबला-पतला, सलीके से संवारी हुई मूंछों वाला, सिर पर पगड़ी और कमर पर तलवार बांधे हुए। उसके बगल में कई लोग बैठे थे, और सबसे चौंकाने वाली बात यह थी कि उन सबके बीच मेरा दोस्त भी था, जो कुछ देर पहले मेरे साथ महल के मुख्य द्वार तक आया था। मैं अकेला अंदर आया था, लेकिन वह आकर मुझसे पहले उनकी सभा में बैठ गया था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है, और अचानक वे सब गायब हो गए।

अब मैं बहुत डर गई थी। मेरे पूरे शरीर से पसीना बहने लगा। अब तक जो नज़ारा खूबसूरत लग रहा था, वह पूरी तरह बदल गया था। हर जगह मकड़ियों ने जाले बुन रखे थे। जगह-जगह चमगादड़ उल्टे लटके हुए थे। पहले हर जगह चांदनी चमक रही थी, और अब चारों तरफ घना अंधेरा था। बाहर कुत्ते ज़ोर-ज़ोर से भौंक रहे थे, और एक चिड़िया उनका साथ दे रही थी। पूरे महल में एक भयानक मंजर छा गया था। मैं अपनी पूरी ताकत से चीख रही थी, लेकिन मेरे मुंह से एक शब्द भी नहीं निकल रहा था। सब मेरे पीछे पड़े थे। मैं बेताब होकर पूरी ताकत से चीखने की कोशिश कर रही थी और भाग रही थी।

दौड़ते-दौड़ते मैं दीवार में बनी सुरंग तक पहुंचा और एक पत्थर से टकराकर गिर पड़ा। अचानक, पत्थर में से एक भयानक आकृति प्रकट हुई।

उसकी आँखें लाल और भयानक थीं, उसका चेहरा तो था पर नाक नहीं, बस मुँह और लंबे, नुकीले दाँत थे। वह अमानवीय आकृति धीरे-धीरे मेरी ओर बढ़ रही थी और किसी राक्षस की तरह मुस्कुरा रही थी। अचानक वह अमानवीय आकृति मेरे करीब आई और मुझे ज़ोर से मारा। मैं वार से बचकर बाहर भागने लगा। जैसे ही मैं दरवाजे के पास पहुँचा, किसी ने मेरे सिर पर वार किया और मैं बेहोश हो गया।

जब मुझे होश आया, तो मैं दरवाजे के पास लेटा हुआ था। वातावरण एकदम शांत हो गया था। पूरब से सूरज उगने लगा था। पूरी तरह होश में आकर मैं सीधे घर की ओर चल पड़ा। जब मैं घर पहुँचा, तो सारे गाँव वाले आँगन में जमा थे और औरतों के ज़ोर-ज़ोर से रोने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। मैंने आगे देखा और मेरे कदम वहीं रुक गए।

मैं बैठ गया और अपने सामने का दृश्य देखने लगा। मेरा शरीर मेरे सामने था। सब लोग मेरे चारों ओर बैठे थे। उस अमानवीय आकृति के प्रहार से बचने के मेरे प्रयास व्यर्थ थे।

इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता, एक निर्मम आकृति ने मेरी छड़ी छीन ली और कुछ ही पलों में मैं महल के प्रांगण में पहुँच गया। वहाँ मेरा स्वागत महल के खजाने के नए रक्षक के रूप में किया जा रहा था और आज से मैं भी महल के खजाने का नया रक्षक बन गया था।

*******समाप्त.*******

---

sjeet